Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JULY-AUGUST, 2021, VOL- 9/66
10.21922/srjis.v9i66.6844

बंगाल के सुप्रसिद्ध चित्रकार – असित कुमार हाल्दार एवं क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार – एक अध्ययन

प्रेमलता कश्यप, Ph. D.

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, (चित्रकला विभाग), गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स कालिज, मुरादाबाद।

Paper Received On: 21 JULY 2021
Peer Reviewed On: 31 JULY 2021
Published On: 1 SEPT 2021

Abstract

कला सदैव से मनुष्य की सहचरी रही है, मनुष्य के सृजन की प्रक्रिया, जिसमें नवीनता का समावेश हो वही कला है। कला एक ऐसी अभिव्यक्ति है, जिसमें सुख शान्ति की प्राप्ति होती है। आत्मा के स्वरूप को समझने की जिज्ञासा और प्रवृत्ति को समझना एक मानवीय स्वभाव है। कलाकार की कृतियों के माध्यम से इस स्वरूप को आसानी से समझा जा सकता है। बगं ाल शैली कला के पुर्नजागरण काल का अभ्युदय माना जाता है। जिसका श्रेय श्री ई०वी०हेविल और श्री अवनीन्द्रनाथ जी को निःसन्देह जाता है। अवनीन्द्र नाथ के शिष्य असित कुमार हाल्दार और क्षितिन्द्रनाथ मजूमदार हुए जिन्होनें बगांल शैली में कार्य किया जहां क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार जी के चित्र वैश्णव धर्म से आते प्राते हैं, वहीं असित कुमार हाल्दार ने चित्रों में बौद्धधर्म सौन्दर्य के साथ, सामाजिक चिन्तन के साथ चित्रों में सौन्दर्य का परिचय दिया है। दोनो ं कलाकारों का आधुनिक भारतीय चित्रकला को अन्तराष्ट्रीय स्थान पर पहुंचाने में पूर्ण सहयोग है। दोनों कलाकारों ने ही बगांल स्कूल से निकलकर उत्तर प्रदेश की कला में नयी दिशा प्रदान की।

शब्द संकेत *– अभिव्यक्ति, कलाकृति, सौन्दर्य पुर्नजाग्रति*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना – भारत में बगं ाल चित्रशैली का अपना ऐतिहासिक महत्व है। इस शैली का उदभव एवं विकास बगं ाल कला परम्पराओं के साथ एक नयी कला चेतना के रूप में हुआ। जिसमें विशेष रूप से श्री ई०वी० हेवल एवं श्री अवनिन्द्रनाथ ठाकुर का नाम लिया जाये तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी असित कुमार हाल्दर एवं श्री क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार विख्यात बंगाली कलाकार थे जिन्होंने अपनी कलाकृतियों में मुगल राजपतू क्या अजन्ता आदि की चित्रकला का अध्ययन करके

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

नवीन परम्परागत चित्रकृतियों को बनाकर कलाकार जगत में पहचान बनायी। दोनों की कलाकृतियों में ललित कलाओं का सुन्दर रूप मिलता है। आप दोनों की कलाशैली में संगीत्मकता, व्यापकता एवं आध्यात्मिकता एवं राष्ट्रप्रेम देखा जा सकता है। अतः दोनों ही कलाकारों ने बगांल स्कूल में कलाकार होने के नाते विशेष प्रसिद्धि प्राप्त की। असितकुमार हाल्दार एवं क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार की कला में जानने के लिए उनके द्वारा किये गये कार्य पर प्रकाश डालना आवष्यक है। असित कुमार हाल्दार – (१० सितम्बर – १८६० – १३ फरवरी १९६४) आप बगांल स्कूल के एक भारतीय चित्रकार और शान्तिनिकेतन में श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर के सहायक थे। यह बंगाल पनु र्जागरण के प्रमुख कलाकारों में से एक थे, आपमें काव्य तथा चित्रकारी दोनों कलाओं का सुन्दर संयागे मिलता है। बचपन से ही कला में रूचि थी। १८ वर्श की आयु में लन्दन के सुप्रसिद्ध वास्तु शिल्पी लियोनार्ड जेनिग्स से भास्कर्य की शिक्षा प्राप्त कर कलकत्ता कला विद्यालय में अपनी शिक्षा समाप्त करने के पश्चात रवीन्द्रनाथ ठाकुर की इच्छा से १९११ में शान्तिनिकेतन के कलाभवन की स्थापना की। सन् १९२३ तक वहां प्रिंसिपल बने रहने के उपरान्त सन १९२४ में महाराजा स्कूल आफ आर्टस जयपुर के प्रधान शिक्षक बने १९२५ में उनका स्थानान्तरण लखनऊ के कला विद्यालय मे ं आचार्या पद पर हो गया। १९४५ में वहां से आप शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त १९६४ ई० में लखनऊ में ही उनका देहावसन हो गया। आपने लेडी हरिघंम की अध्यक्षता में अजन्ता के चित्रों की जो प्रतिलिपियां तैयार हुई थी। उस कार्य में नन्दलालवसु के साथ वे भी थे।१९१४ में अपने जोगीमारा के चित्रों की भी थी। अनुकृति की और इस विलय की खोज की । सन् १९१७ में उन्होनें बाघ की चित्रकला का निरीक्षण किया तथा १९२१ में उन चित्रों की प्रतिलिपि तैयार की आप अवीन्द्रनाथ ठाकुर के अग्रतम शिष्यों में से एक थे आपके द्वारा चित्रित कलाकृतियां भारत के सग्रंहालयों एवं विदेशों के संग्रह में प्रदर्शित है। आपको लन्दन की रायल सोसायटी आफ आटर्स की फैलोशिप उन्हे ं प्रदान की गयी थी। आपने ४० से अधिक ग्रन्थों की रचना की थी। असित कुमार हाल्दार की कला – असित कुमार जी ने लकड़ी, रेशम तथा अन्य माध्यमों में भी काम किया है। प्रारम्भिक रचनाएं भित्ति चित्रों की शैली में अंकित है। अपने जलरंगों तथा तैलरंगों में कार्य किया है। अपने कलाकृतियों में टैक्नीक की सरलता का ध्यान रखा है। सुकुमारता और मधुरता उनकी कला के प्रधान गुण है। उनमें रेखाओं में स्पष्टता तथा कोमलता युक्त सौन्दर्य है। संगीतात्मकता तथा रोमानी सुकुमारता है। आध्यात्मिक शक्ति है। इन सबके साथ ही उनमें अजन्ता की गतिपूर्ण लयात्मकता है। भावपूर्ण कल्पना लय सुकोमला रेखांकन तथा कोमल रंगयोजना इन सबको उनमें सुन्दर समन्वय हुआ है। उन्होनें काष्ठ पर लाख की वार्निश करके टैम्परा विधि से चित्रण की एक विशेष तकनीक विकसित की है। जिसे “Lacist ”

कहा जाता है। उन्होनें – विविध विधाओं में अनेक चित्रग्रन्थो ं की रचना की है। जिनमें मेघदूत, ऋतु सहांर, उमर खय्याम तथा रामायण आदि प्रमुख है। आप केवल षिल्पी ही नहीं थे अपितु बालक मनोरंजन दर्षन तथा ललित कला पर बंगला तथा अंग्रेजी में पर्याप्त लेखन कार्य भी किया है। आपका प्रसिद्ध चित्र जगई मगई (सन्याल परिवार) है जो इलाहाबाद सगं्रहालय में संग्रहित है, अकबर, बसंत बहार, कच, देवयानी, ऋतुसहांर, कुनाल व अशोक, रासलीला जैसे उनकी तूलिका में चित्रित हुए। हाल्दार जी ने ४० से अधिक ग्रन्थो ं की रचना की जिनमें इण्डियन कल्चर एवं एट ए ग्लांस, आर्ट एण्ड ट्रेडीशन, रूपदर्शिका, ललिता कला की धारा जैसा कला इतिहास संबंधी पुस्तकें है। रवीन्द्रनाथ जी की मृत्यु पर बनायी गयी आपकी कृति 'लास्ट जर्नी' भी प्रशंसनीय है। आपके प्रारंभिक चित्रों में सीता, नृत्यांगना व यशोदा माँ उल्लेखनीय है। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इनके विषय में लिखा है कि '' तुम केवल चित्रकार ही नहीं कवि भी हो। असित कुमार हाल्दार आचार्य अवनीन्द्रनाथ ठाकुर के प्रमुख शिल्पों में से थे । आर० एच० स्व० नन्दलालवसु क्षितिन्द्र मजूमदार और शैलेन्द्र डे गुरू भाई थे वे गर्वमेन्ट आर्ट लखनऊ के प्राचार्य रहे। आपने अजन्ता बाघ तथा जोगीमारा के चित्रों की अनुकृतियां तैयार की। 'उमरखायाम' चित्रावली मे ं शैली की मौलिकता है। आपके चित्रो ं में आकृति की सरलता तथा रेखा का प्रवाह दर्शनीय है। उनके चित्रों में 'कुणाल' अकबर एक महान निर्माता तथा रहस्य' आदि उल्लेखनीय है। हाल्दार बाबू कलाकार होने के साथ-साथ एक बंगला गीतकार भी थे। मेघदूत का बंगला अनुवाद और उनके दृष्टान्त चित्र उल्लेखनीय रचनाएं है। सन् १९२३ ई० में हाल्दार ने यूरोप का दौरा किया और जल्द ही यह महसूस किया। यूरोपीय कला यर्थाथवादी है। हाल्दार अमूर्त कवि थे। उन्होनें कालिदास के मेघदूत और शिल्पमाला को संस्कृत से बगांली में अनुवादित किया। आपने दृश्यकला की कई कविताओ ं को चित्रित किया । बुद्ध पर उनकी कला और भारत का इतिहास भी इन्होंने चित्रित किया। मजूमदार इलाहाबाद विश्वविद्यालय की रूचि कला मे ं चित्रकला का प्रशिक्षण करते रहे। क्षितिन्द्रनाथ मजूमदार – मजूमदार पनु र्जागृति काल के मुख्य कलाकार थे, चेतन्यमहाप्रभु का बहुत प्रभाव पडा। इनका जन्म १८९१ में पष्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले में निमतीता नामक स्थान पर हुआ था। जब आप एक वर्ष के थे इनकी माता का देहान्त हो गया था। प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण करने के साथ साथ चित्रकला में विशेष रूचि होने के कारण चोदह वर्ष में उन्होनें पढ़ाई छोड. दी। और चित्रकला में रूचि लेने सन १९०९ में कलकत्ता कला विद्यालय में प्रविष्ट हाने के बाद अवनीन्द्रनाथ ठाकुर के शिष्य बन गये। श्री अवनीन्द्रनाथ ठाकुर अपने किसी भी छात्र को चित्र कला की विषय वस्तु के सम्बन्ध के संबंध में कुछ भी नहीं कहते थें। अपने इच्छा से ही श्री मजूमदार ने बालक ध्रुव का चित्र बनाना दूसरा चित्र राधा का अभिसार बनाया। यह घटना

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

१६०६–१६१० की है। एक बार उस समय रायल कालेज आफ आर्टस लन्दन के अध्यक्ष श्री रोथेन्स्टीन भारत भ्रमण करते हुए कलकत्ता, कला विद्यालय भी गये थे। वे विद्यार्थी मजूमदार जी से बहुत प्रभावित हुए और दस रू० प्रतिदिन देकर तीन दिन में तीन स्कचै बनवाये । अन्तिम दिन उनका ''राधा का अभिसार'' चित्र एक सौ रू० में खरीद लिया। श्री मजूमदार की रूचि चैतन्य विषयक चित्र बनाने में थी। छः वर्ष तक अध्ययन करने के उपरान्त क्षितीन्द्र बाबू इण्डियन सोसायटी आफ ऑरियन्टल आर्ट कलकत्ता में शिक्षक के पद नियुक्त हो गये तथा कुछ समय पश्चात प्रधान शिक्षक बना दिये गये अवनीन्द्र नाथ जी ने भी मजूमदार के अनेक चित्र खरीदे। नन्दलाल वसु, असित कुमार हल्दार आदि क्षितिन्द्रनाथ के सहपाठी थे। मजूमदार जी द्वारा बनाये गये चित्र वाय सराय लार्ड हा लार्ड रोनाल्डषे, आदि अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने खरीदे। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति डा० अमरनाथ झा इंग्लैण्ड गये तो वहां उन्होनें बगांल के भूतपूर्व अंग्रेज गर्वनर सर रोनाल्डशे के संग्रह में क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार के कुछ चित्र देखें । वे उनसे इतने प्रभावित हुए और भारत लौटने पर डॉ० अमरनाथ झा ने श्री मजूमदार को आमंत्रित कर इलाहाबाद विश्वविद्यालय में चित्रकला की शिक्षा का सूत्रपात किया । ०१ सितम्बर सन १६४२ को वे इस विभाग के प्रथम अध्यक्ष नियुक्त हुए । ५६ वर्ष पष्चात इण्डियन प्रेस इलाहाबाद के मालिक श्री हरिकेशव घोष ने क्षितीन्द्रनाथ से गीत गोविन्द तथा चेतन्य के जीवन में सम्बन्धित चित्र बनाने का प्रस्ताव किया। इनमे ं से कुछ चित्र इण्डियन प्रेस द्वारा ''चित्र गीत गोविन्द नामक चित्रावली के रूप में प्रकाशित भी हुए है। मजूमदार जी द्वारा चित्रित कलाकृतियों की प्रदर्शनियां १६४१, १६६३ तथा १६६४ आयोजित की गयी बंगाल कांग्रेस कमेटी ने १६६३ में उन्हें अशोक स्तम्भ के पुरस्कार द्वारा सम्मानित किया। १६६४ में मजूमदार इलाहाबाद विष्वविद्यालय शिक्षक रहे वहां से अवकाश ग्रहण करने के पश्चात वे अपने अन्तिम समय तक इलाहाबाद में ही रहे और ०६ फरवरी १६७५ को वे परमात्मा में विलीन हो गये।

क्षितिन्द्रनाथ मजूमदार की कला – श्री अवनीन्द्रनाथ ठाकुर के चार प्रमुख विषय नन्दलाल वसु, असित कुमार हाल्दार क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार तथा शैलेन्द्रनाथ डे थे। मजूमदार की कलाकृतियों की बात करें तो वह मानव मन को झकझोर देने वाली है। दूसरे शब्दों में भावों से परिपूर्ण हैं। उनमें आवेश है। उन्होने प्रायः, चैतन्य के विचारों पर आघारित राधाकृष्ण की भक्ति की ही विभिन्न मानसिक अवस्थाओं का अंकन किया जो बंगला साहित्य की भी एक प्रमुख विशेषता है। आपकी कलाकृतियों में आन्तरिक और बाहृय दानों सौन्दर्य निहित है। मजूमदार अपने कलाजीवन में सीधे शैली को प्रयोग करते रहे। वे प्रयोगशीलता के चक्कर में नहीं पड़ें उनको कला आकृति रचना से प्रेरित रही। यही कारण है कि इनकी रचनाओं का मुख्य स्वर भक्ति मूलक है। ग्रामीण संस्कृति

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सदैव उनकी कल्पना पर छायी रही। अपने गुरू अवीन्द्रनाथ ठाकुर के प्रति पूर्णतः समर्पित होकर भी उन्होंने उनकी कलाषैली की अनुकृति नहीं की अपितु मौलिक षैली की उदभावना की उनके चित्रों की आकृतियां शास्त्रीय परम्परागत रूपों पर आधारित न होकर बगांल के लोक जीवन से प्रेरित है। इन्हीं के द्वारा इन्होनें रामायण तथा महाभारत जैसे महाकाव्यों के पीछे छिपी मूल भावना को व्यंजना प्रदान की है। उनके व्यक्तित्व का सच्चा प्रतिबन्ध 'राधा' के रूप में मिलता है। उन्होनें उस नारी पात्रो ं में भी राधा की झांकी देखी है, जो उनके रासलीला नामक चित्र से पूर्ण स्पश्ट है। उनके चित्र मानवाकृतियों के साथ वृक्षो, लताओं तथा कुटियो ं का बड़ा ही संगतिपूर्ण संयाजे न हुआ है। चमकदार कोमल तथा पारदर्शी रंगो ं और विशेष रूप से मुक्ता की आभा के समान श्वेतरंग के प्रयोग के चित्रों में संगीतमय वातावरण का सृजन कर देते है। फिर भी उनमें सरलता है। कला की तत्कालीन कसौटी जिसमें परिष्कृति पर बहुत बल दिया जाता था, दृष्टि से उनकें चित्रों को अपने युग में समुचित सम्मान नहीं मिल पाया। आपका रेखांकन अद्वितीय है। यमुना, अभिसारिका, गीत गोविन्द, चैतन्य, लक्ष्मी तथा पुष्प प्रचायिका आदि उनकी प्रसिद्ध कृतियां है। जया अप्पा स्वामी का कथन है कि श्री मजूमदार प्रायः किसी घटना की मनाःस्थिति का अंकन करते है उनके विषय चयन तथा प्रस्तुति में संगीतात्मकता रहती है। द्वितीन्द्रनाथ के चित्रों में रेखांकन सर्वाधिक महत्व का है। और उनकी शैली का आधार भी वहीं है। व स्वयं कहा करते थे कि मैं रेखांकन पर बहुत ध्यान देता हूँ क्योकि यही चित्र का आधार है। क्षितीन्द्रनाथ जी की पूर्ण विभाजित कला में रेखाएं लम्बी तथा प्रवाहपूर्ण है और सावधानी से आकृतियों को बांधती है। उनकी कृतियों में रेखाओं के छोर पृथक से एक कोमल लय उत्पन्न करते है तथा दुपटटों को छोरों उडते और तैरते हुए केशों तथा आभूषणों आदि में देखा जा सकते है। रेखाओं की तुलना में रंग कोमल तथा सामंजस्यपूर्ण है। इस प्रकार स्पष्ट है कि मजूमदार जी ने अपनी कलाकृतियों के द्वारा कला प्रेमियों को अतुल्य योगदान दिया।

उपसंहार – असित कुमार हाल्दर एवं क्षितेन्द्रनाथ मजूमदार दोनों प्रसिद्ध कलाकारों की कला में ललित कलाओं का सुन्दर संयोग मिलता है। आपने कला जगत की अपनी अमूक कृतियों में सरोकार कर दिया है। आपकी कलाकृतियों पूर्ण लेखक, गत्यात्मकता, संगीतात्मकता सुकुमारता, अध्यात्मिकता आदि देखने को मिलती है एवं अजन्ता की गतिपूर्ण कलात्मकता भी है। दोनों की कलाकृतियों में ऐन्द्रिक सौन्दर्य है। बाश टैक्निक से बनाये गये चित्र पश्र ासं नीय है। उनके चित्रों में मानवकृतियों के साथ वृक्षों लताओं तथा कुटियों का बहुत ही संगीतपूर्ण संयोजन हुआ है। चमकदार कोमल तथा पारदर्शी रंगों और प्रभावशाली स्ट्रोक्स से दशाओं के मन को मन्त्रमुग्ध किया

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

है। उपर्युक्त विश्लेष ाण से सपष्ट है कि असित कुमार हाल्दार और क्षितिन्द्र नाथ मजूमदार की कला ने समाज के प्रति सच्ची सेवा कलाकार के रूप में की है जो प्रशंसनीय है।

सन्दर्भ सूची

शर्मा, लोकेशचन्द्र, भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, भारत गोयल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।

वर्मा, डा० अविनाश बहादुर, भारतीय चित्रकला का इतिहास, प्रकाश बुक डिपो बरेली।

अग्रवाल, आर०ए०- कला विलास, भारतीय चित्रकला का विवेचन, इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ - संस्करण २०१३

शुक्ल रामचन्द्र, कलापसंग, कोरोना, आर्ट पब्लिशर्स, मेरठ।

प्रदीप, किरण, कलादर्शन एवं आधुनिक भारतीय चित्रकला, आकृति-३, प्रकाश मीडिया, कृष्णा हाउस मेरठ।

हाल्दार, असित कुमार, भारतीय चित्रकला, इलाहाबाद १९५९

अग्रवाल गिरीजकिशोर, आधुनिक भारतीय चित्रकला, राज पब्लिकेशन, आगरा २००६

गुर्टू, राची रानी, कला दर्शन, साहनी प्रकाशन, दिल्ली, १९५३

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies